सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2025 का द्वादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। यह अंक नव संवत्सर विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। सवाई सिंह (व्याख्याता) द्वारा लिखित **"महर्षि वाल्मीकि और रामायण का सांस्कृतिक चिन्तन "**लेख में महर्षि वाल्मीकि के जीवन वृत्त, आदिकाव्य रामायण की विषयवस्तु, तथा रामायण का भारतीय संस्कृति और लोकजीवन पर उसके प्रभाव पर विस्तार से प्रकाश डाला है। कमलरानी द्वारा लिखित **भारतीय पुरालिपियों का उद्भव एवं विकास** लेख में लिपि की प्राचीनता को स्पष्ट करते हुए प्राचीन भारतीय लिपियों के इतिहास का वर्णन किया है। प्रीति साहू द्वारा लिखित **पाण्डुलिपि सम्पादन : समस्या एवं समाधान"** लेख में पाण्डुलिपि सम्पादन में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान का उल्लेख है। वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी **उपवास से स्वास्थ्य लाभ** लेख में भारतीय सनातन संस्कृति में उपवास के महत्त्व को बताते हुए उपवास करने से होने वाले लाभ का वर्णन किया है।

अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के **'राष्ट्रोपनिषत्'** के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा